Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 1826–1834

AVAILABILITY AND UTILITY OF EDUCATIONAL E-RESOURCES IN THE LIBRARY

पुस्तकालय में शैक्षिक ई-संसाधनों की उपलब्धता एवं उपयोगिता

Dr. Pyare Lal [1], Santosh Kumar Pushkar [2]

[1] Research Director, Professor, Department of Library and Information Science, India
[2] Research Student, Department of Library and Information Science, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.5499

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The present research paper has been conducted with the aim of finding out the availability and utility of educational e-resources in the library of Lala Lajpat Rai Memorial and Affiliated Sardar Vallabh Bhai Patel Medical College. Under the research, data has been collected from 50 respondents through questionnaire and the findings of the research study show that despite the availability of resources in the libraries, there is a lack in the level of interest of the users and the resources that are available are not used properly by the users, hence the researcher has also presented suggestions in his research findings to the librarians to establish access to e-resources in the libraries and to the users.

Hindi: प्रस्तुत शोध पत्र लाला लाजपत राय स्मारक एवं सम्बद्ध सरदार वल्लभ भाई पटेल चिकित्सा महाविद्यालय के पुस्तकालय में शैक्षिक ई-संसाधनों की उपलब्धता एवं उनकी उपयोगिता का पता लगाने के उद्देश्य से अध्ययन किया गया है। शोध के अन्तर्गत 50 उत्तरदाताओं से प्रश्नवाली के माध्यम से आकड़ों का संकलन किया है तथा शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से पता चलता है कि पुस्तकालयों में संसाधनों की उपलब्धता होने के बावजूद उपयोगकर्ताओं की रुचि के स्तर में अभाव देखनों को मिलता है तथा जो संसाधन उपलब्ध है उनका समुचित प्रयोग उपयोगकर्ताओं द्वारा नहीं किया जाता है अतः शोधार्थी द्वारा पुस्तकालयाध्यक्षों को पुस्तकालयों में तथा उपयोगकर्ताओं की ई-संसाधनों तक पहुंच स्थापित करने के लिए अपने शोध निष्कर्ष में सुझाव भी प्रस्तुत किये गये है।

Keywords: Library, Newspapers, Magazines, Knowledge, Information Communication Technology Etc, पुस्तकालय, समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, ज्ञान, सूचना संचार प्रौद्योगिकी आदि

1. प्रस्तावना

सुमेर संग्रहालय में 2600 ईसा पूर्व के प्राचीन पुस्तकालयों के अस्तित्व के संकेत मिले हैं, जिनमें क्यूनिफॉर्म लिपि में लेखन के कुछ संकेत मिले हैं। 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में कुछ पुस्तकालयों के अस्तित्व के संकेत भी मिले हैं, जिनमें मिट्टी की गोलियों के अभिलेखागार शामिल हैं। भारत में पुस्तकें एकत्र करने की परंपरा बहुत प्राचीन है। प्राचीन भारत में पुस्तकों के निर्माण और संरक्षण का कार्य बौद्ध मठों में किया जाता था। भारतीय चिकित्सा परिषद (डब्प्) की स्थापना 1934 में हुई थी। इसके बाद 1 अप्रैल 1966 को भारत में चिकित्सा पुस्तकालय की स्थापना की गई। पहले इसे केंद्रीय चिकित्सा पुस्तकालय के रूप में जाना जाता था। यह पुस्तकालय नई दिल्ली में स्थित है। यह पुस्तकालय भारत और दक्षिण एशिया में काम कर रहे चिकित्सा पुस्तकालय पेशेवरों को प्रशिक्षित करता है। बाद में इसे राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय (छडस्) के रूप में जाना जाने लगा। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ विभिन्न प्रकार की पुस्तकें, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, पांडुलिपियाँ, फिल्में, नक्शे, प्रिंट, दस्तावेज, ई-पुस्तकें, ऑडियो, पुस्तकें, डेटाबेस आदि संग्रहीत हैं। पुस्तकालय शब्द लैटिन भाषा के लिवर शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है पुस्तक। पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था है जो समाज के कल्याण में निरंतर प्रयत्नशील रहती है तथा ज्ञान को विद्वान और अज्ञानी दोनों में समान रूप से वितरित करती है। यह एक सेवा-उन्मुख संस्था भी है जो लोगों की बौद्धिक भूख को संतुष्ट करने का सक्षम साधन है। पुस्तकालय और समाज को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि पुस्तकालय मानवता के विकास की नींव है जो किसी भी देश की संस्कृति और सभ्यता उसके पुस्तकालय में सुरक्षित रहती है।

2. पुस्तकालय के उद्देश्य

पुस्तकालय किसी भी संस्था का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। पुस्तकालय उपयोगकर्ता ज्ञान प्राप्ति के लिए अपनी आवश्यकता के अनुसार जानकारी प्राप्त करने के लिए समय-समय पर पुस्तकालय में आते रहते हैं तथा पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय कर्मचारी उन सभी स्रोतों से जानकारी एकत्रित करते हैं। अतः पुस्तकालय के निम्नलिखित उद्देश्यों के संदर्भ में पुस्तकालय के उद्देश्यों का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है-

ज्ञान का विकेन्द्रीकरण- पुस्तकालयों के विकास से उपयोगकर्ताओं के बौद्धिक विकास में सहायता मिलती है, जिससे ज्ञान का प्रसार निरन्तर होता रहता है। यह वर्तमान ज्ञान के प्रवाह को सदैव गतिशील बनाए रखने में सहायक होता है। ज्ञान की खोज समय की मांग है तथा खोज के पश्चात् उसके विकास के लिए उसका संरक्षण एवं विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। अतः पुस्तकालय ज्ञान के सामाजिक विकास के लिए आवश्यक साधन उपलब्ध कराकर विश्व ज्ञान को बढ़ाने में सहायक होते हैं। इसके लिए देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाना- पुस्तकालय विभिन्न उद्योगों एवं प्रणालियों में कार्यरत लोगों को समय रहते सम्बन्धित विषयों में नवीनतम विचार, प्रकृति एवं साहित्य से अवगत कराकर कर्मचारियों में सृजनात्मकता का संचार करता है।

3. शोध एवं विकास में पुस्तकालयों का योगदान

शोध आज एक सामाजिक आवश्यकता है क्योंकि निरंतर बढ़ती जनसंख्या और उसकी उच्च वैज्ञानिक जीवनशैली के लिए अधिकाधिक नए तत्वों की आवश्यकता है, जो निरंतर नए विकास से ही संभव है। मूलतः किसी भी देश की प्रगति उसके शोध पर निर्भर करती है। इसीलिए प्रत्येक विकसित और उन्नत देश में शोध कार्यों के लिए होड़ लगी रहती है। आज प्रत्येक देश अपने आर्थिक ढांचे का एक बड़ा हिस्सा शोध कार्यों पर खर्च करता है। मूलतः यह कहा जा सकता है कि शोध आधुनिक समाज की जीवनरेखा है क्योंकि हमारा आर्थिक जीवन स्तर, हमारी संस्कृति और हमारी प्रगति सभी शोध पर आधारित हैं।

4. सूचना संचार प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय

आधुनिक समाज सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व से भली-भांति परिचित है। संचार प्रौद्योगिकी के साथ मिलकर यह सूचना संचार प्रौद्योगिकी के रूप में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के क्षेत्र में अधिक उपयोगी और प्रभावी है। वास्तव में सूचना संचार में प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रभाव पुस्तकालय और उसकी सेवाओं पर देखा जा सकता है, जो पुस्तकालय स्वचालन से लेकर पुस्तकालय नेटवर्क तक हो सकता है। इसे इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी से लेकर डिजिटल लाइब्रेरी के रूप में भी समझा जा सकता है।

डिजिटल लाइब्रेरी दुनिया भर के पुस्तकालय और सूचना पेशेवरों के लिए सूचनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम बन गई है। डिजिटल लाइब्रेरी पारंपरिक लाइब्रेरी से काफी अलग हैं क्योंकि डिजिटल लाइब्रेरी में ऑडियो, वीडियो और मल्टीमीडिया कंटेंट पाठकों तक पहुँचाया जाता है। डिजिटल लाइब्रेरी में कागज की जरूरत नहीं होती। डिजिटल लाइब्रेरी कई विषयों और विशेषज्ञों के साथ अलग-अलग पृष्ठभूमि से अलग-अलग विचारों और पहलुओं को एक साथ लाने का एक प्रयास है। यह प्रकाशन और पुस्तकालयों में हो रहे बदलावों का विश्लेषण करता है। डिजिटल लाइब्रेरी उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को आसानी से पूरा करती हैं और उन्नत जानकारी साझा कर रही हैं। विलियम, आर्म्स संबंधित सेवाओं सहित सूचनाओं का व्यवस्थित संग्रह, जहाँ सूचना डिजिटल रूप में संग्रहीत होती है और नेटवर्क पर सुलभ होती है।

5. ई-संसाधनों की आवश्यकता

वर्तमान युग सूचना युग है। हर व्यक्ति पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों से विश्वसनीय और सही जानकारी की अपेक्षा करता है। भारत में पुस्तकालय नई जानकारी के लिए इन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। कई पुस्तकालय लंबे समय से डिजिटल और नेटवर्क सूचना का उपयोग कर रहे हैं। आज पुस्तकालय परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं। एक ओर बजट में कमी, जगह की कमी और प्रकाशनों की बढ़ती लागत जैसी चुनौतियां हैं, तो दूसरी ओर सूचना के क्षेत्र में प्रगति से उत्पन्न जानकारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके कारण पिछले कुछ दशकों ने पूरे परिदृश्य को बदल दिया है। आज सीडी रोम, मल्टीमीडिया, इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन, ऑनलाइन पत्रिकाएँ तीव्र गति से लोकप्रिय हो रही हैं। नए प्रकाशन सामने आ रहे हैं। यह क्रांति कंप्यूटर विज्ञान और प्रकाशन प्रणाली से पैदा हुई है जो दुनिया के देशों को करीब लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पुस्तकालयों में नेटवर्किंग की आवश्यकता है क्योंकि किसी भी देश की तकनीक मानव और भौतिक संसाधनों पर निर्भर करती है। ई-संसाधनों को गूगल जैसे सर्च इंजन के माध्यम से आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है। ई-संसाधन पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं के लिए निःशुल्क हैं। आप इंटरनेट का उपयोग करके किसी भी कंप्यूटर से उन तक पहुँच सकते हैं। आपको लाइब्रेरी खुलने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

6. शोध के उद्देश्य

- पुस्तकालय में उपलब्ध शैक्षिक ई-संसाधनों के उपयोगकर्ताओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
- पुस्तकालय में उपलब्ध शैक्षिक ई-संसाधनों की स्थिति का अध्ययन करना।
- छात्रों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध शैक्षिक ई-संसाधनों के उपयोग की स्थिति का अध्ययन करना।

7. साहित्य की समीक्षा

साहित्य की समीक्षा का अर्थ है शोध के किसी विशेष क्षेत्र के ज्ञान को व्यवस्थित करना और ज्ञान का विस्तार करना तथा यह दर्शाना कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन उस क्षेत्र में सहायक होगा। साहित्य की समीक्षा एक रचनात्मक कार्य है। इसमें शोधकर्ता को अपने अध्ययन को तार्किक कथन प्रदान करने के लिए प्राप्त ज्ञान को एक अनोखे तरीके से एकत्रित करना होता है।

आर., मूर्ति और जे. डेमिनिक (2015) ने तमिलनाडु में कोल्लम्बदुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय के ई-संसाधनों का प्रकाशन उद्देश्यों के लिए संकाय द्वारा उपयोग का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश संकाय स्वयं-प्रकाशन उद्देश्यों के लिए ई-संसाधनों और पत्रिकाओं का उपयोग करते हैं। कई उत्तरदाता प्रकाशित संसाधनों की खोज के लिए ळववहसम का उपयोग करते हैं। अधिकांश संकाय ब्राउजिंग उद्देश्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

जी. जेनेटिक और टी. सखानन (2013) ने कांचीपुरम जिले में इंजीनियरिंग संस्थानों में ई-संसाधनों के उपयोग में पिछड़े अंतर का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने ई-संसाधनों और आईसीटी संसाधनों और सेवाओं के उपयोग को आवश्यक माना है और वे एक महत्वपूर्ण वस्तु बन गए हैं। लिंग के आधार पर ई-संसाधनों के उपयोग में कोई अंतर नहीं पाया गया।

सी. रंगनाथन (2013) ने भारतीय दर्शन विश्वविद्यालय, तिरुचिरापल्ली के पुस्तकालय के पाठकों द्वारा ई-डेटाबेस के उपयोग का अध्ययन किया। निष्कर्षों में पाया गया कि ई-संसाधनों तक पहुँच पाठकों की शैक्षणिक उन्नति की ओर ले जाती है। अधिकांश पाठकों का मानना है कि ई-संसाधनों तक पहुँच आसान है और वे आधुनिक जानकारी प्रदान करते हैं। जबकि, पाठकों को पारंपरिक माध्यमों से जानकारी प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए जिसके माध्यम से पाठक अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

पी. मूर्ति, वनमुगम और एम. कनकराज (2013) ने भारती विश्वविद्यालय, कोल्लमवत्तूर से संबद्ध कला और विज्ञान महाविद्यालयों के उपयोगकर्ताओं द्वारा आईसीटी आधारित सेवाओं के उपयोग और उपयोग के लिए तत्परता का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि 27.42 प्रतिशत उपयोगकर्ता आईसीटी आधारित संसाधनों और सेवाओं की खोज में प्रतिदिन 2 घंटे बिताते हैं। 27.03 प्रतिशत उपयोगकर्ता अपने शोध कार्यों के लिए आईसीटी सेवाओं का उपयोग करते हैं। यह भी देखा गया कि 38.37 प्रतिशत उपयोगकर्ता ळववहसम खोज इंजन का उपयोग करते हैं। 39.97 प्रतिशत उपयोगकर्ता आईसीटी आधारित संसाधनों और सेवाओं से संतुष्ट थे। निष्कर्षों से यह भी पता चला कि स्नातकोत्तर छात्रों और शोधकर्ताओं को आईसीटी का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

पी. बालसुब्रमण्यम, एट अल. (2013) ने दक्षिण तमिलनाडु में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं के ऑनलाइन सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि हालांकि सभी व्याख्याता ई-संसाधनों से परिचित हैं और इंटरनेट का उपयोग करना जानते हैं, लेकिन अधिकांश व्याख्याताओं को ई-जर्नल, ई-पुस्तकें और ई-डेटाबेस तक पहुँचने के दौरान धीमी इंटरनेट गति की समस्या का सामना करना पड़ता है।

एस. धनवर्धन (2012) ने तमिलनाडु के इंजीनियरिंग कॉलेजों में डिजिटल संसाधनों के उपयोग पैटर्न का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि कुड्डालोर में इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रों द्वारा डिजिटल लाइब्रेरी संसाधनों का उपयोग किया जाता है। 33.07ः पाठकों ने डिजिटल लाइब्रेरी संसाधनों के बारे में जानकारी की कमी बताई। इंटरनेट के उचित उपयोग के लिए उपयोगकर्ताओं को खुद में सुधार करने की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 1.1

उत्तरदाताओं का आयु के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं की आयु	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	21-25	34	68
2.	26-30	04	8
3.	30-35	03	6
4.	35-40	09	18
	कुल योग	50	100

स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े

तालिका 1.1 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 68 प्रतिशत उत्तरदाता 21 से 25 आयु वर्ग से सम्बन्धित पाये गये हैं।

तालिका संख्या 1.2

उत्तरदाताओं का शिक्षा के स्तर के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं की शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	स्नातक	2	04
2.	परास्नातक	3	06
3.	व्यावसायिक शिक्षा	45	90
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.2 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 90 प्रतिशत उत्तरदाता व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित पाये गये हंै।

तालिका संख्या 1.3

उत्तरदाताओं का चिकित्सा व्यवसाय में वर्तमान पद के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	आचार्य	3	6
2.	सह-आचार्य	0	0
3.	चिकित्सकीय स्टाॅफ	30	60
4.	षोध छात्र	17	34
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.3 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाता चिकित्सा स्टाफ पद पर कार्यरत है।

तालिका संख्या 1.4

उत्तरदाताओं का लाइब्रेरी में भ्रमण करने के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	प्रतिदिन	48	96
2.	सप्ताह में दो बार	2	04
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.4 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 96 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन पुस्तकालय में जाते है।

तालिका संख्या 1.5

उत्तरदाताओं का लाइब्रेरी में इन्टरनेट सुविधा उपलब्ध होने के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	50	100
2.	नहीं	00	00

	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.5 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 100 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में इन्टरनेट की सुविधा होना स्वीकार करते है।

तालिका संख्या 1.6

उत्तरदाताओं का लाइब्रेरी में समय व्यतीत करने के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	एक घंटा	5	10
2.	एक घंटे से 2 घंटे	6	12
3.	2 घंटे से 5 घंटे	39	78
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.6 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 78 प्रतिशत उत्तरदाता 2 से 5 घंटे पुस्तकालय में अध्ययन करते है।

तालिका संख्या 1.7

उत्तरदाताओं का कालेज की ॅमइेपजम के बारे में मत के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	50	100
2.	नहीं	00	00
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.7 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 100 प्रतिशत उत्तरदाता चिकित्सा महाविद्यालय की अपनी वेवसाइट होना स्वीकार करते है।

तालिका संख्या 1.8

उत्तरदताआंे का लाइब्रेरी में ई-संसाधन की उपलब्धता के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	50	100
2.	नहीं	00	00
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.8 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 100 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में ई-संसाधन की सुविधा होना स्वीकार करते है।

तालिका संख्या 1.9

उत्तरदाताओं का ई-संसाधनों के बारे में जानकारी के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	हाँ	50	100
2.	नहीं	00	00

	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.9 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 100 प्रतिशत उत्तरदाता ई-संसाधन के बारे में जानकारी होना स्वीकार करते है।

तालिका संख्या 1.10

उत्तरदाताओं का ई-संसाधन के उपयोग के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	पुस्तकालय में	8	16
2.	आवास या हास्टिल में	2	04
3.	विभाग में	6	12
4.	अन्य स्थान पर	34	68
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.10 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 68 प्रतिशत उत्तरदाता ई-संसाधन का उपयोग अन्य स्थान पर करते है जबकि 16 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में ई-संसाधन का उपयोग करते है, 12 प्रतिशत उत्तरदाता विभाग में ई-संसाधन का उपयोग करते है, 4 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आवास या हा ॅस्टिल में उपयोग करते है।

तालिका संख्या 1.11

उत्तरदाताओं का ई-संसाधन के उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त करने के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	लाइब्रेरी स्टाफ से	45	90
2.	दोस्तों से	3	6
3.	स्वयं से	2	4
4.	वाहय प्रषिक्षण द्वारा	00	00
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.11 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 90 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में ई-संसाधन के उपयोग के बारे में पुस्तकालय विभाग के सदस्य द्वारा जानकारी प्राप्त होना स्वीकार करते है।

तालिका संख्या 1.12

उत्तरदाताओं का ई-संसाधन का प्रयोग करने के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृश्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	प्रतिदिन	46	92
2.	सप्ताह में दो बार	4	08
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.12 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 92 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में प्रतिदिन ई-संसाधन का उपयोग करते है।

तालिका संख्या 1.13

उत्तरदाताओं का ई-संसाधन का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	षोध कार्य हेतु	38	76
2.	आसाइन्मेन्ट को पूरा करने के लिये	4	8
3.	अन्य	8	16
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.13 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 76 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में ई-संसाधन का उपयोग शोध कार्य में करते है।

तालिका संख्या 1.14

उत्तरदाताओं का ई-संसाधन का प्रयोग करने की अवधि के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	एक वर्श से	34	68
2.	1 से 2 वर्श	16	32
	कुल योग	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.14 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 68 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में ई-संसाधन का उपयोग पिछले एक वर्ष से कर रहे है।

तालिका संख्या 1.15

उत्तरदाताओं का सबसे अधिक उपयोग करने के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	Online E-Resource	✓	✓
2.	E-books	✓	✓
3.	Online Data base	✓	✓
4.	E-Thesis	✓	✓
5.	E-Journals	50	100
	All of above	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.15 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 100 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में आनलाईन ई-संसाधन, ई-पुस्तक, आनलाईन डाटा बेस का उपयोग करते है।

तालिका संख्या 1.16

उत्तरदाताओं का ई-संसाधन या प्रकाशित किताबे की उपयोगिता के आधार पर वर्गीकरण			
क्र०सं०	उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	ई-संसाधन	✓	✓

2.	प्रकाशित पुस्तके	✓	✓
5.	दोनों के लिये	50	100
	All of above	50	100
स्रोत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़े			

तालिका 1.16 के आकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक 100 प्रतिशत उत्तरदाता पुस्तकालय में ई-संसाधन और प्रकाशित पुस्तकों का महत्व उनके लिए अधिक है।

8. शैक्षिक निहितार्थ

- निष्कर्षों के आधार पर ई-संसाधनों के उपयोग को महत्वपूर्ण माना गया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठकों ने ई-संसाधनों के कुशल उपयोग पर जोर दिया है।
- पुस्तकालय को पाठकों को ई-संसाधनों से परिचित कराने के लिए सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए। इसके लिए प्रकाशकों या विक्रेताओं द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जानी चाहिए।
- पुस्तकालय को हर साल नए पाठकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए ताकि वे आसानी से प्रासंगिक जानकारी प्राप्त कर सकें। छात्रों और शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित करने की योजना पर विचार किया जाएगा। इसके लिए अधिक कार्यशालाएँ आयोजित की जाएंगी।
- पाठकों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए अधिक ई-पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएंगी। पुस्तकालयाध्यक्षों को उन पुस्तकालयों में ई-संसाधनों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाएगा, जहाँ इनकी कमी है। पुस्तकालयाध्यक्षों को ई-जर्नल की संख्या बढ़ानी चाहिए ताकि पाठकों को अधिक जानकारी उपलब्ध हो और वे संतुष्ट महसूस करें।
- पुस्तकालयाध्यक्षों को पुस्तकालय में पाठकों की संख्या बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण ई-संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए। पुस्तकालयाध्यक्षों को अपने पाठकों से ई-संसाधनों से संबंधित समस्याओं के बारे में जानना चाहिए। इन समस्याओं को यथाशीघ्र हल करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

9. सुझाव

- ई-संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग से सम्बन्धित मेडिकल कॉलेजों के अलावा अन्य राज्यों के विश्वविद्यालयों में भी शोध कार्य किया जा सकता है।
- ई-मानचित्र, ई-ग्रंथसूची, ई-मेल और ई-पाण्डुलिपियों के उपयोग और पाठकों की जागरूकता पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

10.शोध निष्कर्ष

प्रारम्भ में शोधकर्ता कुछ उद्देश्यों और लक्ष्यों के साथ काम शुरू करता है। काम पूरा होने के बाद वह उद्देश्यों के अनुसार अपने परिणामों की जांच करता है। इससे शोधकर्ता को अपने काम की सफलता का ज्ञान होता है। शोधकर्ता किसी भी शोध कार्य के प्रायोगिक आंकड़ों से अपने निष्कर्ष निकालता है और उन्हें सामान्यीकृत करता है।

निष्कर्ष में शोधकर्ता ने पाया कि पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की पुस्तकालय में संसाधनों तक सीधी पहुंच है और परन्तु कुछ पुस्तकालय उपयोगकर्ता पुस्तकालय के ई-संसाधनों से अनभिज्ञ हैं। अतः पुस्तकालयाध्यक्ष को चाहिए कि पुस्तकालय में जागरूकता अभियान चलाकर उपयोगकर्ताओं को संसाधनों के उपयोग के बारे में समय-समय पर प्रशिक्षित करना चाहिए। इसके अलावा पुस्तक प्रदर्शनी, सम्मेलनों के माध्यम से भी लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

जैनिटिक, जी और सखनन, टी. (2013). कांचीपूरम जिले के इजीनियरिंग संस्थाओं में ई-संसाधनों के उपयोग में लैगिंग भिन्नता का अध्ययनः इंफोर्मेशन सांइस ऑफ एशियन जर्नल वॉल्यूम 3(2)।

रंगानाथन, सी. (2013). तिरूचिरापल्ली के भारतीदासन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के पाठकों द्वारा ई-डेटाबेस का उपयोग एक अध्ययनः इंटरनेशनल इंफोर्मेशन पुनः प्राप्ति ऑफ जर्नल।

वकाई, राज, के. (2012). अन्नामलाई विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों द्वारा ई संसाधनों का उपयोगः लाईब्रेरी जर्नल ए.जे.आई.एस.टी.।

भट्ट, एस एवं राणा, एम. एस. (2011). राज्यस्थान राज्य के विशेष सदर्भ में भारत के इंजीनियरिंग शिक्षकों के बीच ई-संसाधनों की जानकारी का उपयोग लाईब्रेरी हाईटेक जर्नल रू वॉल्यूम 29, (3)।

मूर्ति, आर एवं डेमिनिक, जे. (2013). तमिलनाडु के कोयम्बदूर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के ई-संसाधनों का प्राध्यापकों द्वारा प्रकाशित करने का उद्देश्य से उपयोग इफोर्मेशन सांइस ऑफ एशियाई मैगजीन एण्ड टैक्नोलोजी वॉल्यम 3 (2)

झांग, ली. (2011). पाठकों के शैक्षिक स्तर अनुशासन एवम ई-संसाधनों के उद्देश्यों सम्बन्धी कारकों के मध्य सम्बन्धः इलेक्ट्रॉनिकस लाईब्रेरी वॉल्यूम 29 (6), 2011

वणयुगम मूर्ति, कनकराज, एम. पी. (2013). कोलम्बदूर के भारती पर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कला और विज्ञान महाविद्यालयों के आर टी सी पर आधारित सेवाओं की पाठकों द्वारा उपयोग एवम उपयोग करने की तैयार एक अध्ययन। इंफोर्मेशन साइंस ऑफ एशियन जर्नल एण्ड टैक्नोलोजी वॉल्यूम 2 (1)।

कुम्बेर, वी.डी. एवं हगडाली, जी.एस. (2009). कर्नाटक विश्वविद्यालय में ई-पत्रिकाओं का उपयोगः सीरिज जर्नल ऑफ इंफोर्मेशन ऑफ मैनेजमेन्ट वॉल्यूम 46, (1)।

राजानन्द, एम. एम. एवं उपाध्याय, एस. (2006). अलिगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा ई-पत्रिकाओं का उपयोगः इंटरनेशनल इंफोर्मेशन एण्ड लाइब्रेरी रिव्यू वॉल्यूम 38, (3)।

कौर, बलजिन्द्र. (2006). पटियाला पुस्तकालय में इलेक्ट्रॉनिक-संसाधनों का उपयोगः आई.एल.ए. बुलेटिन वॉल्यूम 42, (3)।

लार्ड, जे. (2003). रायल कॉलेज सदस्यों द्वारा ई-पत्रिकाओं को बढावा देने के लिए दूर दराज क्षेत्रों में उपयोग पर बलः लाइब्रेरी ई जर्नल सीरियल बाय आर. सी. एन. यू. के. वॉल्यूम 16, (1)।

सन्ना, तल्हा एवं मौला, हैंनी. (2003). ई-पत्रिकाओं और डेटाबेस के उपयोग एवं उपयोग के कारकों का अध्ययनः जर्नल ऑफ डाक्यूमेन्टेशन वॉल्यूम 59 (6)

किंग, डेविड. (2006). यू.के. में पुस्तकालय के कर्मचारियों के लिए आई.सी.टी. प्रशिक्षणः इलैक्ट्रॉनिस लाइब्रेरी जर्नल वॉल्यूम 24 (2)।

ईदूजर, जेनिस एवं रेरॉन, एल. (2004). पेसिफिक विश्वविद्यालय के छात्रों का वेव उपयोगिता को लागू करने के लिए जागरूकताः जर्नल ऑफ लाइब्रेरीशिप वॉल्यूम 30 (4)।

अहमद, सयाद. साजिद. (2002). अरब खाडी के पुस्तकालयों में वेब आधारित सेवाएंः ऑनलाईन इंफोर्मेशन रिव्यू वॉल्यूम 26 (4)।

लार्जे, पी. एवं बेहस्थी (2000). एक (क्लासरूम) कना कन वेब संसाधन के रूप में सूचना विज्ञान के लिए अमेरिकन सोसायटी के उपयोगकर्ताः जर्नल ऑफ दी अमेरिकन सोसायटी फॉर इंनफोर्मेशन साइंस वॉल्यूम 51, (12)।

धनवर्धन, एस. (2012). तमिलनाडु के इंजिनीयरिंग महाविद्यालय में डिजिटल संसाधनों के उपयोग के तरीके. पुस्तकालय विज्ञान के नेशनल जर्नल ऑफ लाइब्रेरी सांइस वॉल्यूम 5 (1)।

कुमार, चन्द्रमोहन, एवं डेमनिक, सी.एस. (2012). तमिलनाडु के कोयंबटूर इंजीनियरिंग महाविद्यालय के पाठकों द्वारा डिजिटल पुस्तकालय की सेवाओं का उपयोग, पुस्तकालय की सेवाओं का उपयोगः लाईब्रेरी जर्नल ऑफ ए. जे. आई. एस. टी. वॉल्यूम 2।

धीमान, एस एवं गोस्वामी, एन. (2008). एम.आई.एस.टी. ए. डी. एस. पुस्तकालय में सग्रंह विकास सूचना प्रौद्योगिकी, इंनफोर्मेशन टेक्नॉलॉजी की डेसीडॉक बुलेटिन।